वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 102	Year 12	Volume 09	October 2021 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

श्री जगदीश लाल आहुजा आपका जीवन सबके लिए प्रेरणा है

40 वर्षो तक हर रोज चण्डीगढ़ पी जी आई के बाहर लंगर खिलाने वाले श्री जगदीश लाल आहुजा 85 वर्ष की आयु में कैंसर से हार गये। गरीबों के मसीहा कहलाने वाले लंगर बाबा का जीवन संर्घष की मिसाल है। उन्होने अपने इस सेवा के मिशन को चलाये रखने के लिये अपनी करोड़ो की जायदाद बेच दी और रूगण अवस्था में लगे रहे। ऐसा अनुठा उदाहरण मिलना मुश्किल है।

पेशावर में जन्में श्री जगदीश लाल आहुजा भारत के बंटवारे के समय 1947 में 4 रूपये लेकर पंजाब के मानसा शहर में आये थे। किशोरावस्था में जीवन यापन के लिये कड़ा संघर्ष करना पड़ा। कभी नमकीन की रेड़ी लगाते तो कभी फलों की। 1956 में चण्डीगड़ आये तो भाग्य बदला और केले के व्यापार में लाखों कमाया और कई मकान जायदाद भी खड़ी की। 1980 में उन्होने महसूस किया कि पी जी आई में ईलाज के लिये बाहर के स्थानों से आने वाले अधिकतर मरीजों की

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

आर्थिक हालत अच्छी नहीं होती। दवाईयों का खर्च सहन करने के लिये मरीजों के साथ आए संरक्षकों और परिवारजनां को कई बार भूखा सोना पड़ता है। ऐसे में उन्होने प्रण किया कि मैं पी जी आई में ईलाज के लिये आये व्यक्तियों और उनके परिजनों को भूखा नहीं सोने दूंगा और लंगर प्रारम्भ कर दिया । रोज कम से कम 1000 व्यक्तियों के दोनों समय के भोजन व नाश्ते चाय की व्यवस्था की जाने लगी। इस सारे खर्च को पूरा करने के लिये उन्होने अपने मकान जायदाद बेचने शुरू कर दिये परन्तु लंगर जारी रखा।

श्री जगदीश लाल आहुजा जी का कहना था कि उनको लंगर देने की प्रेरणा उनकी दादी माई गुलाबी से मिली थी जो गरीबों के लिये पेशावर में लंगर लगाया करती थी। वर्तमान में इस काम में उनकी पत्नी निर्मल भी उनका पूरा सहयोग करती थी। उनकी बेटी का कहना है किवह अपने पिता द्वारा चलाए जा रहे पुण्य काम को चालु रखेंगी।

भारत सरकार ने 2020 में उनको पदमश्री से सम्मानित किया था। वैदिक थोटस इस महान आत्मा को नमन करता है। हमारे शास्त्रों में धन की तीन गति बताई है। दान, भोग और नाश। यह ईश्वर की कृपा ही होती है यदि व्यक्ति का झुकाव दान की और हो।

जल जीवन का आधार है

ओम अमृतापस्तरणमसि स्वाह–वेद के इस मन्त्र का अर्थ है। हे परमेश्वर आप जगत के आधार हो। आपका यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

प्रसिद्ध कवि रहीम ने कहा है–बिन पानी सब सून। अर्थात जल के बिना कुछ भी नहीं। कहने का अर्थ है––जल जीवन है। यह सच्चाई है। परन्तु पानी तभी कल्याणकारी रहेगा यदि हम पानी के महत्व को समझ कर इसका प्रयोग ऐसे करें कि इस की निर्मालता व पवित्रता बनी रहे।

अगर हम अपना इतिहास देखें तो पायेंगे कि राज्य और शहर वहीं बसाये गये जहां नदियां थी या जल का स्त्रोत था। बड़ी सभ्यतायें वहीं पनपी जहां जल था। परन्तु दुख इस बात का है कि आज मनुष्य इस सच्चाई से आंखे मूंद रहा है। किसी को इस बात की चिन्ता नहीं कि जमीन के नीचे का जल तेजी से खत्म हो रहा है। जमीन का हृदय चीर कर पानी निचोड़ने वाले जमीन का दर्द समझने की कोशिश नहीं कर रहे।

पंजाब व हरियाणा के किसान हों या फिर बोतलबन्द पानी बेचने वाली कम्पनियां हां या सोफट डिंक बनाने वाली, सभी भूमीगत पानी का बेखुमार दाहन कर रही है। इसका दुष्परिणाम सामने है। पानी का स्तर नीचे जाता जा रहा है। जहां पानी 20 फुट पर मिल ताजा था , आज 60 फुट पर भी बहुत तलाशने से मिल रहा है।

परन्तु इस से भी अधिक चिन्ता का विषय है कि हमारे किसानों द्वारा बढ़ सढ़ कर कीटनाशकों करने से पानी विषक्त होता जा रहा है। परन्तु इस देश में किसान चाहे स्टवल जला कर वातावरण को दुषित करे या फिर कीटनाषकों द्वारा जल को, उन को कुछ भी कहने की हिम्मत किसी में नहीं क्योंकि वह तो वोट बैंक है।

अच्छा हो हम जागे और एक एक बून्द पानी की बचाने की सोंचे।

कोविड के बाद आर्य समाजों के उत्सव फिर प्रारम्भ हो चुके है।

यह अतीव प्रसन्नता की बात है कि कोविड के बाद आर्य समाजों के उत्सव फिर प्रारम्भ हो चुके है, और सभी आर्य समाजे फिर से कार्यशील हैं। अधिकारी वर्ग बहुत उत्साह से अपना अमूल्य समय देकर यह सभी करते हैं। हमारा भी कर्तव्य है कि इन अवसरों पर आर्य समाज में पहुंच कर सब का लाभ उठायें। फायदा ही फायदा है, नुकसान कुछ नहीं। हाल में ही सैक्टर –7, व सैक्टर 18 की आर्य समाजों ने बहुत अच्छें ढग से अपने वार्षिक उत्सव किए। सैक्टर–22 में पहले ही दो उत्सव किये और अब 25 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानंद शहीदी दिवस बहुत उत्साह के साथ मना रहे है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9217970381 या Paytm No. 9217970381

यह है हमारी सभ्यता और संस्कृति जिस पर हम इतना गर्व करते है। सच्चाई यह है कि गर्व करने वाला कुछ है ही नहीं। मेरी पहली रेले यात्र

भीमराव अम्बेदकर

हमारा परिवार मूल रूप से बाम्बें प्रेसेडेंसी के रत्नागिरी जिले में स्थित डापोली तालुके का निवासी है। इस्ट इडिया कम्पनी का राज शुरू होने के साथ ही मेरे पुरखे अपना वंशों से चला आ रहा धंधा छोड़ कम्पनी की फौज में भर्ती हो गये। मेरे पिता ने भी फोज में नोकरी कर ली। वह अफसर की रैंक तक पहुंचे और सूबेदार के पद से सेवा निवृत हुए। तब हम सतारा में रहते थे और पिता जी कोरेगांव में खजांसी की नौकरी में थे। मरी मां की मृत्यु हो चुकी थी। पिता मुझे, मेरे बड़े भाई और मेरी बड़ी बहन के दो बेटों को काकी के जिम्मे छोड़ कोरेगांव चले गए थे। एक बार उनीोने गर्मी की छुटिटयों में हमें कोरेगांव आने के लिए पत्र लिखा। इस को पढ़ कर हमस ब बच्चे बहुत प्रसन्न और उत्साहित थे क्योंकि हमें रेल गाड़ी से यात्रा का मौका मिल रहा था। हम ने रेल गााड़ी पहले नहीं देखी थी । हमारे सफर के लिये अंग्रेजी स्टायल के नए कुर्ते,रंग बिरंगी नक्कायेदार टोपी, नए जूते और रेशमी किनारी वाली धोती खरीदी गई। हमें कहा गया कि मसूर में उतरना जो कि कोरेंगांव का नजदीकी स्टेशन है। गााड़ी याम पांच बजे मसूर पहुंची। हम वहां हमें लेने के लिये अपने पिता या उनके चपरासी के आने की उमीद कर रहे थे परन्तु उन में कोईीा वहां पर नहीं था। हम चार बच्चों को वहां स्अेशन पर अकेले एक घंटे से इतजार करते देश, वहां का स्टेशन मास्टर हमारे पास आया। हमारे नये कपड़े ऐसा आभास करवा रहे थे कि हम किसी अच्छे ब्राहमण परिवार से है। वह हमारी परेशानी से दुखी था। परन्तु तभी वह पूछ बैठा कि हम कौन है, मैने कहा हम महार है।। यह सुनते ही स्टेशन मास्टर के आव भाव बदल गये और वह अपने कमते में चला गया।

करीब आधे घंटे बाद उसने आकर पूछा कि आप क्या चाहते है। मैने कहा कि हमें कोइ लेने तो आया नहीं अगर कोई बैलगाड़ी किराये पर मिल जाये जो हम कोरेगांव चले जायेंगे। बैलगाड़िया तो बहुत सी वहां खड़ी थी परन्तु इस बात को जाननें के बाद कि हम अछूत हैं कोई भी बैलगाड़ी वाला ले जाने के लिये तैयार नहीं था। हम दूना किराया देने को तैयार थे परन्तु पर पैसों का लालच भी काम नहीं आया। स्अेशन मास्टर ने पूछा कि क्या हम गाड़ी हांक सकेगें? हम राजी हो गये। एक गााड़ीवान इस के लिये तैयार हो गया। वह बैलगाड़ी के साथ पैदल चल रहा था। उसे दूना किराया मिल रहा था और वह अपवित्र होने से भी बच गया था। स्टेशन से कुछ दूरी पर एक नदी थी पर बिलकुल सूखी हुई। कहां कहां गढें में थोड़ा पानी था। गाढ़ीवान ने कहा कि हमें यहें खाना खा लेना चाहिये क्योंकि रास्ते में और कहीं पानी नहीं मिलेगा। हम अपना टिफिन बाक्स खोलकर खाने लगे। खकर हम पानी के गढ़े के पास पानी पीने गये। परन्तु उस पानी में से गाय बैल के गोबर और पैशाब की बदबू आ रही थी। पानी के बिना हम बापिस आ गये और आगे चल दिये। रात के दस बज गये थे और हमें बहुत प्यास लगी थी। गाढ़ीवान से जब पानी की बात की तो उसने कहा––सामने चुंगी है प रवह है हिन्दु, अगर उसे पता लग गया कि तुम महार हो तो पानी नहीं मिलेगा। खुद को मुसलमान बता कर तुम अपनी तकदीर आजमा सकते हो। उसके कहे अनुसार मैं चुंगी वाले के पास गया और बोला हम मुसलमान हैं, क्या हमें पानी मिल सकेगा। उसने रूखाई से कहा तुम्हारे लिये यहां पानी किसने रखा है।

Prosperity by way of wealth should translate in to prosperity in our conduct too

Bhartendu Sood

Vedas say earn and acquire as much wealth by honest means as you can but also upgrade yourself as a human being – that is, manurbhav be a man 'the one who can see self in other'.

It means cultivating pleasing manners. The least you can do is not to offend and hurt others with your behaviour. To become a better and responsible person with good civic sense, to embrace virtues like honesty, truthfulness, patience, consideration for fellow human beings and compassion karuna for those who are not as privileged as you are.

While it is expected that as one acquires material prosperity, his conduct, manners, behavior also gets more refined as material prosperity plugs many voids in human life but it is seen that material prosperity erodes character, values and behavior in some and this is something that we need to guard against.

For example, some of us are so proud of our children – who are not even eligible for a driving licence – when they drive cars in by-lanes at high speed. We don't mind telling lies for petty gains. Arrogance and ego grow along with growth in income. Patience in one is seen as a sign of weakness, you are called a “loser”. You are seen as an achiever, as one who gets things done if you can jump the queue as others wait patiently their turn. We don't mind using our wealth for creating shortcuts in our passage to success. The more we earn and the more things we acquire, the greedier we become.

Another distinguishing feature of our prosperity is – as we acquire wealth we start looking down on the less privileged. Suddenly we feel we're different – and so create a separation. We change our manner and demeanour according to who we address – a VIP or someone who is less known. Test of our behaviour is not how we treat VIPs or those who matter to us but how we treat the people who are less fortunate than us.

One's behaviour and conduct in society is not only about how we relate to each other but also in the way we treat public places and facilities. The Delhi Metro train service is a case in point. Within five years it has grown so much in popularity that it is almost always full of commuters. However, if it were not mandatory for Metro doors to remain closed, chances are that people would think nothing of hanging out, risking their lives and others'. Etiquette and pleasant manners need not be restricted to the home, office or among peers and friends – it needs to be evident in public places as well. Pushing and shoving each other to catch a train or bus does not behove those who otherwise project themselves as educated or evolved

people. Senior citizens and others who might be physically challenged need to be given preference in seating and so on. With material progress and technological advance, we need to also take care to nurture comparable upward evolution of our own selves.

SEE ALL COMMENTS

To come back to Vedantic culture and tradition, a truly evolved human being would be perceived as one who would be sensitive to the needs of others and not only his own. This is the reason perhaps why all Vedic rituals and prayers are directed not at the welfare of any one individual but are meant for the common benefit of all. Hence, the tradition promotes the concept that all life is one family – vasudaiva kutumbakam.

Good manners and a compassionate outlook are marks of one who is on the path of onward evolution, striving to reach higher planes of consciousness. Good ethical practices and mindful living are not the preserve of the renunciate – they are equally important for those who choose to live in the world and yet perhaps strive to rise above it.

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उन से सहमत हो । लेखकों के मोवाईल नम्बर दिये हैं, आवश्यक हो तो आप उन से सम्पर्क कर सकते हैं । न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ ही मान्य है।

FOR THIS BOOK PLEASE CONTACT
9217970381
08850930138
9417044481

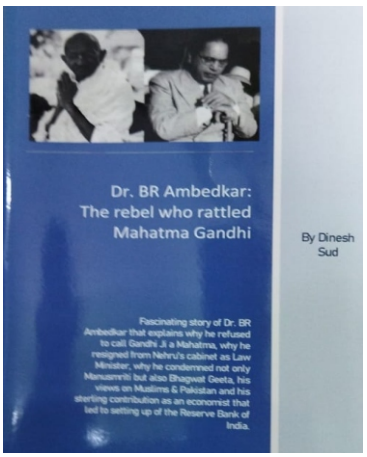

Editor, Publisher and Printer Bhartendu Sood. Printed at Amit Arts 36 MW, Industrial Area, Phase -1, Chandigarh. Phone No-0172-4614644 Place of Publication House No-231, Sector-45-A, Chandigarh-160047

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

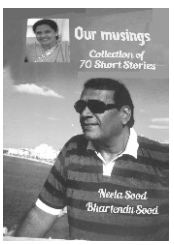

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रू भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

मात्र मूर्तिपूजा पर्याप्त नहीं

प्रीति चौधारी 'मनोरमा'

आज के युग में प्रायः यह देखा जा रहा है, किपढ़े–लिखे परिवारों में भी धार्मिक कर्मकांडों जैसे–मूर्ति पूजा, व्रत, साधना, जागरण आदि पर विशेषबल दिया जा रहा है। चाहे व्यक्ति के अंतर्मन मेंकितनी भी मलिनता हो किंतु वह मनके की मालाहाथ में थामकर स्वयं को संत की भाँति प्रदर्शितकरना चाहता है। धर्म अंतःकरण का विषय है, यहआस्था की पराकाष्ठा है, जहाँ हम कण–कण मेंईश्वर के दर्शन कर लेते हैं ।

जब कण–कण में भगवान हैं, तो फिर इंसानोंमें हम भगवान को क्यों नहीं देखते हैं? क्यों हम झूठीवर्जनाओं से बाहर निकलना नहीं चाहते? कब तकइसी तरह धर्मांधता के कारण सच्चे धर्म से मुखमोड़ते रहेंगे? और अंधविश्वास की बेड़ियों में जकड़ेरहेंगे?

धर्म कभी भी दूध को गंगा में विसर्जित करनेके लिए नहीं कहता है।अक्सर सुनने में आया है कि संभ्रांत परिवार केव्यक्ति विशेष ने एक केन भरकर दूध जल में प्रवाहितकिया है, मंदिर में अर्पित किया। यह सब मात्रपाखण्ड है। यदि हम ध्यानपूर्वक सोंचें तो वह दूधकिसी की क्षुधा को शांत करने का जरिया बनसकता था।

प्रायः लोग मंदिर और दरगाह में चादरचढ़ाकर पुण्य प्राप्त करना चाहते हैं। ईश्वर कोचादर की आवश्यकता नहीं है, किंतु हमारे आसपासबहुत से ऐसे दरिद्र व्यक्ति हैं, जिनके पास सर्दी सेबचाव के लिए पर्याप्त कपड़े नहीं हैं। हमें दान ऐसीजगह करना चाहिए जहाँ उसकी आवश्यकता हो।ईश्वर को कपड़ों की कतई जरूरत नहीं है, हमेंकपड़े जरूरतमंदों के लिए देने चाहिए, ताकि सर्दीकी ठिठुरन से उन्हें निजात मिल सके। संवेदना कीगर्मी उनके तन को भी प्राप्त हो सके।

मंदिर में बैठकर प्रवचन सुन लेने मात्र से हीमें पुण्य प्राप्त नहीं होगा, अपितु हमें आत्मा कीआवाज को सुनकर दीन

दुखियों के कष्टों को हरनाहोगा। दरिद्रता के दंश से पीड़ित गरीबों के विषय मेंविचार करना होगा।

अंत में चंद पंक्तियाँ पूजा जैसे गहन शब्द काअर्थ बताने के लिए कहना चाहूँगी–

दीन हीन की सेवा करना ही पूजा कहलाता है
वो महान होता है, जो गिरे हुए को उठाता है।
प्रतिदिन मंदिर जाने से ही पूजा नहीं होती है,
भगवान दखुी होते है जब भी अन्याय व शशेशन कहीं होती है
जो आसँू पोछें दुखियों के वह सच्चा भक्त कहाता है
वही तो मखुमडंल पर प्यारी सी मसुकान लाता है,
दीन हीन की सेवा करना ही पूजा कहलाता है
भगवान नहीं बसते मंदिर, मस्जिद गुरुद्वारे में
भगवान तो रहते हैं पावन कर्मों के गृह द्वारे में,
सच्ची भक्ति है उसकी जो गिरे हए को उठाता है
मानव के प्रति मानवता का प्रतिदिन धर्म निभाता है
दीन हीन की सेवा करना ही पूजा कहलाता है

कृतज्ञता की शक्ति

नीला सूद

हम सभी जानतें हैं कि कृतज्ञता शब्द का सीधा अर्थ है उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते रहना जिनसे हमें जीवन में कुछ भी प्राप्त होता है। वैसे तो हर ऐक के जीवन में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कि उसके जीवन को प्रभावित करते हैं, अच्छा बनाते हैं व उंचा उठाते हैं व कई बार उसे कठिनाई कि परिस्थिति में बाहर निकालनें में सहायक होते हैं, उनके प्रति कृतज्ञ रहना हमारा धर्म है, परन्तु वेदों के अनुसार जिन तीन का हर मनुष्य को हर समय कृतज्ञ रहना चाहिये वे हैं––– सृष्टि का रचईता व सब का पालनहार ईश्वर, दूसरा, माता पिता जो कि हमे जन्म देकर पालन पोषण करते हैं व तीसरा, हमें जीवन का रास्ता दीखाने वाला गुरू। इन में सब से पहले ईश्वर के प्रति धन्यवादी व कृतज्ञ रहने के लिये कहा गया है। एक महान लेखक का कहना है कि जब हम सृष्टि के रचईता व सब का पालनहार ईश्वर के कृतज्ञ हो जाते हैं तो स्वभाविक तौर पर सब के कृतज्ञ हो जाते हैं क्योंकि बाकी सब कृपा के पात्र जैसे कि माता पिता, गुरू, मित्र, अच्छा जीवन साथी, अच्छी संतान इत्यादी भी प्रभु की असीम कृपा से मिलते हैं। अर्थात कृतज्ञता का अर्थ यह हुआ, '' प्रभु व उसकी असीम कृपा से प्राप्त वस्तुओं के प्रति सन्तोष व आभार।''

कृतज्ञता में अदभुत शक्ति है यही नहीं जो व्यक्ति कृतज्ञता की भावना से जीवन जीता है उसे हर समय अदभुत आनन्द की प्राप्ति होती है। जहां कृतज्ञता की क्रिया आनन्दमय है प्रक्रिया उस से भी कहीं अधिक आनन्दमय व सुख देने वाली है। जो व्यक्ति कृतज्ञता के आनन्द को एक बार भोग लेता है धन्यवाद करना उसकी आदत बन जाती है व जीवन शैली बन जाती है। वह वर्षा की बून्दे पड़ते देखे या फिर सूर्य को उदय होते देखे, एकदम नतमस्तक हो कर ईश्वर का धन्यवाद करता है। यही नहीं भीड़ वाले स्थान पर बैठने का स्थान मिल जाये तब भी वह ईश्वर का धन्यवाद करता है।

एक बहुत सफल व्यक्ति का कहना है कि जीवन में उसने जो भी प्राप्त किया वह कृतज्ञता को अपने जीवन की शैली बना कर किया। उसका यहां तक कहना है कि अगर आप सफल जीवन के रहस्य ढूंढ रहें हैं तो सब से पहले कृतज्ञता को अपने जीवन की शैली बना कर देखें। यही नहीं उसका मानना है कि अगर आप अपने पास माजूद चीजों के बारे में कृतज्ञ नहीं तो आपके पास ज्यादा चीजें आना असम्भव है। क्योंकि आप कृतघनता;जिसने हमारे साथ अच्छा किया हो उसका आभारी हतंजमनिस न होना द्ध की अवस्था में होते हैं तो जो आपके विचार व भावनायें होती हैं वे सभी

नाकारात्मक होते हैं जैसे कि असंतुष्टि, ईष्या आदि, इन भावनाओं के साथ और चीजें पाना असम्भव है।

दुनिया के महानतम वैज्ञानिक आईस्टीन की जब भी कोई प्रशंसा करता था तो वह बहुत विनम्र भाव से उन से पहले हुये वैज्ञानिकों का धन्यवाद करते जिनके किये हुये काम को आधार बना कर वह आगे बढ़ सके। यह है कृतज्ञता।

आप की कृतज्ञता की क्रिया जहां एक और दूसरे को सुख देती है वही आप को उस की नज़र में उंचा भी उठा देती हैं मुझे याद आती है 2004 में मै जब अपने पति के साथ पाकिस्तान यात्रा के दौरान लाहौर के अनारकली बाज़ार मे घूम रही थी तो वहां हमने म्दहसपी मे एक बोर्ड पर लिखा देखा श्धर्मा मार्केट।श धर्मा क्योकि संस्कृत हिन्दी शब्द है जानने की इच्छा हुई। वहां के दुकानदारों से प्रश्न किया कि मार्केट का नाम धर्मा क्यो है तो जो उन्होने बताया वह दिल को खुश करने वाला था उनमें से सब से बुजुर्ग ने बताया कि जहां यह मार्केट है वहां पहले धर्म चन्द सेठ की हवेली होती थी। सेठ बहुत धर्म कर्म वाले थे दान पुण्य करते थे सब से प्यार कारते थे। जब देश का बटवारा हुआ तो वह हिन्दुस्तान चले गये। हमने कुछ समय बाद उस हवेली को डंतामज मे बदल दिया। फिर प्रश्न उठा कि नाम क्या रखें। तो सभी ने कहा कि जिस सेठ की वजह से हमें यह दुकाने मिली नाम उसी के नाम पर होना चाहिये व उस मार्केट का नाम धर्मा मार्किट रख दिया,। इस उदाहरण में देखने वाली बात यह है कि उन लाहोर वालों के कृतज्ञता पूर्ण कार्य ने जहां हमें आपार सुख दिया वहीं उनके प्रति हमारे दिल में आदर की भावना भी भर दी। यह है कृतज्ञता की शक्ति।

कृतज्ञता की अनुभूती का सब से सुन्दर परिक्षा हम अपने घर में ही कर सकते हैं। अपने माता पिता को जब यह कहेगें कि हम ने जो भी पाया है वह आपकी कृपा व आर्शीवाद से पाया है तो जो उनके चेहरे पर खुशी होती है वह उन्हे दुंनिया की और कोई चीज नही दे सकती। यही नही आपके घर का महौल ही बहुत सुखद हो जाता है। इस के विपरीत जहां कृतध्नता;नदहतंजमनिसदमेद्ध का बनसजनतम बन जाता है वहां क्लेश ही क्लेश रहता है।

कुछ वर्ष पहलें कृतज्ञता का एक सुन्दर उदाहरण तब मिला जब आर्य स्कूल नवांशहर, पंजाब में 1920–30 में शिक्षा प्राप्त करने वाले पाकिस्तान के जस्टिस मोहम्द सिदकी के कृतज्ञ मुसलमान परिवार ने इस विद्यालय में एक नकपजवतपनउ बड़ा हाल बनाकर अपना इस आर्य स्कूल के प्रति अपना ऋण अदा किया। जस्टिस मोहम्द सिदकी के कृतज्ञता की भावना उनके इन शब्दों से जो कि उनके पुत्र जस्टिस खलिल उल रहमान ने ब्यान किये से झलकती है––––'' मेरे पिता जी को अपने इस विद्यालय की बहुत याद आती थी। हमसे कहते थे––अगर आर्य समाजी यह स्कूल न खोलते तो न तो मैं पढ़ पाता और न ही जज बनता'' इस सुन्दर कार्य का मूल्यांकन आप तभी कर सकते हैं जब खुद से यह प्रश्न करें कि क्या आप अगर जस्टिस मोहम्द सिदकी के स्थान पर होते तो ऐसा कर पाते?

यह घटना इस बात को भी सिद्ध करती है कि कृतज्ञता एक ऐसा मानवीय गुण है जिस का धर्म,स्थान से कोई सम्बन्ध नहीं । जब यह स्पष्ट है कि कृतज्ञता एक ऐसा मानवीय गुण है जिससे अदभुत आनन्द की प्राप्ति होती है, तो क्यों न इसे जीवन की शैली बनाया जाये।

Indian way of parenting has also its merits

Bhartendu Sood

In one of my jobs, the Company I was working for had Japanese collaboration and the collaborator's top man was the Company's Managing Director. As the CEO, I was spending a lot of time with him; therefore, we often talked about our families and respective family cultures. One day, during normal tete-a tete, I asked about his children. I was dumbstruck when he told me that his daughter was a receptionist in a hotel.

After a pause, when I asked if he did not involve her in his business. He laughed and said with his hands up, " Mr Sood, it is just not possible with Japanese children. They have their own lives. We withdraw as parents once they are out of school. What they do after that, what career they choose, whom they befriend or marry is their own life. For example my daughter entered into wedlock and then took divorce. On both occasions she never consulted me. To sum up, our philosophy is ---"Child needs parents as he is helpless. He needs the mother, the father, their protection; but when the child can stand on his own, the parents have to learn how to withdraw from the life of the child. I really wonder how the grown ups tolerate parenting in your country. In Japan, even if the parents try, they will be shown their place. Again, I really don't know how the parents want to continue with parenting even when their children stand up on their own as it is the source of constant anxiety and takes away the personal freedom of the ones who opt to continue with parenting. Again it can mean foregoing your hobbies, interests and plans. In my opinion, parenting after a child has

grown up is neither in the interest of the child nor in the interest of parents."

Left remunating, I found he was right in his observation about us. In India children grow out of childhood, but parents never grow out of their parenthood. Eversince a new trend has emerged with both wife and husband in jobs, grandparents find the field open to step into the role of parents of their grandchildren and this way they have another twenty years or so of parenting. But, as I have observed, there is a difference in the way biological parents do parenting and the way grandparents do parenting. While the former gives little freedom, the latter gives a lot of freedom which the child needs for his growth. Like biological parents, they rarely impose themselves upon the child and do not encroach upon his space. From the very beginning their effort is to help the child to be himself. Child swims unhindered in the river of passion and love as the grandparents have no expectations and they simply want to give and give everything. They are to support, strengthen, nourish but not to impose their ideas. Again, today when most of the grandparents, particularly in our

middle class, have more money than they can spend, they need someone with whom they can share this excess money. Naturally they find their grandchildren to be the most worthy of a lot.
But the question is -------which culture is right? I feel that both have their merits and demerits. To be with your kin in the old age when you have become feedle and need constant support,mentally as well as physically, is any day better than spending time in old age homes, unless you opt for it for personal reasons.Leave aside a few aberrations, the children in South East countries take care of their old parents and that can be an enough award for the prolonged years of parenting.

क्या महर्षि दयानन्द मुसलमान या ईसलाम विरोद्रि थे ?

भारतेन्दु सूद

भारत की स्वतन्त्रता के बाद एक महान आत्मा जिनके कद को जानबूझ का छोटा कर दिया गया वह हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती। कारण हमारे आर्य समाज से जुड़े नेता व अधिकांश स्वामी आदि उनके उदेश्यों व कार्यो को अपने निजी स्वार्थो के लिये ठीक से प्रस्तुत न कर सके। आज हालात यह हैं कि हमारे राज नेता अपने वोट बैंक के कारण स्वामी दयानन्द का नाम लेने से भी कतराते हैं, अपने आप को उन से जोड़ने की बात तो दूर रही। आर्य समाज का प्रयोग वह अपने खुद के सम्मान के लिये करते है। पंजाव में आर्य समाज बहुत प्रभावशाली रहा है, आर्य समाज के सैंकड़ो छोटे बड़े स्कूल, महाविद्याालय व विश्वविद्यालय है जहां लाखेां में विद्यार्थी पढ़ते हैं व करोड़ो ही पढ़ कर निकल गये। यही नहीं स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय व प लेखराज सभी पंजाव के थे व स्वतन्त्रता संग्राम और शिक्षा के प्रसार में भी जुड़े हुये थे।परन्तु दुख और हैरानगी वाली बात यह है कि छोटे से छोटे बाबे के

नाम पर, जिन में बहुतों के नाम आप ने सुने भी नहीं होंगे, उनके जन्मदिवस या मरणदिवस पर सरकार द्वारा हर समाचार पत्र में पूरे या आधे पेज का विज्ञापन देकर याद किया जाता है परन्तु किसी भी आर्य समाज के महान पुरूष के जन्मदिवस पर नहीं दिया जाता। जिम्मेवार सरकार नहीं हमारे नेता व स्वामी आदि है, जिन्हें अपने सम्मान से मतलव है।

मैने सत्यार्थ प्रकाश पढा है। उसका निचोड़ यह है कि महर्षि ने ईश्वर को वेदों के अनुसार ही माना है। यह भी सत्य है कि विभिन्न धर्म गुरूओं ने वेदों की परिभाषा अपने अनुसार की है परन्तु जिस तरह स्वामी जी ने वेदों को प्रस्तुत किया है वह सब से उपयुक्त व तर्कसंगत प्रतीत होता है। उदाहरण के लिये स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर एक है परन्तु उसके गुणों के आधार पर कई नाम है और वह अजन्मा व अनादि है। यह बात सोलह आने ठीक लगती है। पहले कुछ अध्यायों में उन्होने वेदों के अनुसार ईश्वर और ईश्वर स्तुती व उपासना को बताया है साथ ही मनु स्मृति को आधार बना कर परिवार, परिवार में स्त्री का स्थान , बच्चे का पालन पोषण कैसा हो और कैसे उसे संस्कारी बनाया जाये, शादी विवाह कब और किस से किया जाये पर प्रकाश डाला है । इसी के साथ एक पूरा अध्याय राजा का शासन कैसा हो, न्याय व्यवस्था कैसी हो और राजा और प्रजा के एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों पर है। बाद के अध्यायों में उन्होने विभिन्न धर्मो व समुदायों में वेद विरूद्ध व तर्कहीन बातों का तर्क द्वारा ही खण्डन किया है। इस में सब से खास बात यह है कि उनका अक्रोश सब से अधिक पुराणों पर अधारित हिन्दु धर्म और इस के अलग अलग समुदायों पर है। आखिर के अध्याओं में उन्होने दूसरे धर्मो की तर्कहीन बौर बेतुकी बातों पर तर्क द्वारा ही आक्रमण किया है, चाहे वह इसलाम है या ईसाई धर्म। ऐसे में यह कहना या मानना कि महर्षि ईसलाम या ईसाई धर्म के विरूद्ध थे बिल्कुल गलत है बल्कि मैं यह कहुंगा ऐसा कहना उनके साथ बहुत बड़ी बेइन्साफी है। ईसलाम से कही अधिक आक्रमण उनका पौराणिक हिन्दु धर्म, जिसे की आज के 90 प्रतिशत हिन्दु मानते है, के विरूध है ऐसे में क्या आप यह कहेगें कि महर्षि हिन्दु धर्म के विरूद्ध थे? सच्चाई है कि वह वेद विरूद्ध और तर्कहीन बातें चाहे कियी भी धर्म या समुदाय में हो उनका विरोद्ध जनहित के लिये निर्भय हो कर किया। उनके जीवन काल की घटनायें यह बताती है कि मुसलमान व ईसाई विद्वानों में उनका आदर सम्मान था, उसके विपरीत हिन्दु मत मतान्तरों के पण्डित उनके सख्त विरोद्धि थे व इनकी जान के दुश्मन थे। 17 बार उनको मारने की कोशिश की गई, परन्तु हर बार यह काम हिन्दु मत मतान्तर के लोगों का था जो कि उनको अपने मतों के नाम पर चलाये जा रहे व्यापार पर एक बहुत बड़ा खतरा समझते थे।

यह भी सत्य है कि हमारे भारतवर्ष मे स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होने उन हिन्दुओं को जो अपने ही पण्डितो और धर्म के ठेकेदारों के शोशण के कारण मुसलमान या ईसाई बन गये थे बापिस हिन्दु धर्म में आने का रास्ता बनाया वरना उससे पहले तो काई मुसलमान या हिन्दु चाहे कितना भी चाहे हिन्दु धर्म में आ ही नहीं सकता था । आज के बंगला देश के 15 वी सदी के मुसलमान शासक की कहानी हम सभी जानते हैं। हिन्दु कन्या के साथ विवाह सूत्र में बंधने के बाद वह जगह जगह भटका परन्तु कोई भी हिन्दु धर्म नेता उसे हिन्दु धर्म में स्थान देने के लिये तैयार नहीं हुआ। उसका परिणाम यह हुआ कि उसको

मजबूरन अपनी हिन्दु पत्नी को मुसलमान बनाकर उसका मुसलिम रीती रिवाज में निकाह करना पड़ा और जो अपमान उसे हिन्दु धर्म के ठेकेदारो के हाथें मिला उसका बदला लेने के लिये उसने बंगाल के हिन्दंओं को ताकत द्वारा मुसलमान बनाने में लग गया। परन्तु इस से यह अर्थ निकालना कि स्वामी दयानन्द ईसलाम या ईसाई धर्म विरोद्वि थे गलत है। उनका मानना था कि जो हिन्दु अपने ही पण्डितो और धर्म के ठेकेदारों के शोशण के कारण या फिर किसी ताकत या प्रलोभन द्वारा मुसलमान या ईसाई बना दिये गये थे, उन्हे पूरा अधिकार होना चाहिये कि वह अपने धर्म में बापिस आयें और हिन्दु धर्म उनको अपने में बापिस लेने के लिये उदारचित हो ।

आज एक ऐसा महौल बन गया है जब कि उनको हिन्दु धर्म का सुधारक व मानवता का मसीहा न मानकर इसलाम विरोद्धि माना जाने लगा है। यदि सावरकर उनका प्रशसंक था तो इस का अर्थ यह नहीं कि सावरकर और महर्षि के विचार, खासकर मुसलमानों के संद्रभ में एक थे।

दुख यह है कि महर्षि दयानन्द के कार्य का ठीक मून्यांकन हम आर्य समाजी ही नहीं कर पाये तो और कौन करेगा। मुसलमान उनका कितना आदर करते थे, यह निम्न घटना से स्पष्ट हो जायेगा।

मुसलमान कोतवाल––––––आदाव अर्ज करता हूं स्वामी जी।

महर्षि––––––ईश्वर आपका कल्याण करे। कहिये कैसे आना हुआ कोतवाल जी।

कोतवाल––सवामी जी मैं आपके गुनहगार को पकड़ लाया हूं। इसी ने आपको जहर वाला पान दिया था। कहिये इसे क्या सजा दी जाये?

महर्षि––– इसे छोड़ दीजिये, मैं लोगों को बन्धन से छुड़वाने के लिये आया हूं, बन्धन में डालने के लिये नहीं।

कोतवाल–––धन्य हैं आप स्वामी जी। आप मजहव के सच्चे पैरोकार है।, कौम के सच्चे रहबर है।। खुदा आप को सलामत रखे।

यह सत्य है कि महर्षि हर एक मानव से प्यार करने वाले थे। उनके दिल में हिन्दु मुसलमान आदि का कोई भेद नहीं था। उनके द्वारा बनाये आर्य समाज के नियम इसका सबूत है कि उन्होने आर्य समाज की स्थापना सारे मानव जाति के कल्याण के लिये की। नियमों में आर्य शब्द आता है न कि हिन्दु। यदि ऐसा होता जो अलीगड़ विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सर सैयद अहमद खान उनके बारे में इतनी उंची राय क्यों रखते। आज के आर्य समाजियों या फिर 20वीं सदी के आर्य समाजियों के मुसलमानों के प्रति क्या विचार थे यह उनका निजि मामला है कारण हम राजनैतिक घटनाओं और राजनैतिक नेताओं के विचारों से भी प्रभावित होते हैं। जब 1920 के बाद या फिर बंगाल विभाजन के बाद हिन्दु मुसलमानों के बीच खाइ बन गई थी तो हर हिन्दु या मुसलमान का प्रभावित होना स्वभाविक था परन्तु हिन्दुओं का यह कहना कि या फिर यह समझना कि महर्षि दयानन्द मुसलमान या ईसलाम विरोद्वि थे पूर्णतया गलत और महर्षि के कद को छोटा करना है । वह तो ऋषि थे व मावनता के पूजारी व हर एक मानव से प्यार करते थे। उन्होने यही सन्देश दिया––मर्नुभव । हु मनुष्य मानव बनो।

Remembering Swami Virjanand birthday on his birthday 17th October 1778

Kewal Ahluwalia.

In the circle of Arya Samajs, Swami Virjanand, the blind sage of Mathura is only known as the celebrated teacher of Swami Dayanand Saraswati who founded the Arya Samaj in 1874, but very little is known about his early life. It is important to take a look at the lives of the Himalayan Yogis who influenced Maharishi Swami Dayanand Saraswati.

In brief. Swami Virjanand was born in a place near Jullundur in the year 1778 in Brahmin famiy. At the tender age of five, the boy lost his eyesight after an attack of small pox and before he completed his twelfth year his parents died. The boy was thrown to the mercies of his elder brother and sister-in-law at very young age. As they did not treat him well so Virjanand soon left their house.

His wanderings led him to Rishikesh where he led a life of meditation and austerity for about three years. Swami Virjanand left Rishikesh for Hardwar. At Hardwar Virjanand came in contact with one Swami Purnanand, a renowned Sanskrit scholar Swami Purnanand taught him Sanskrit grammar he took up the work of teaching others. Swami Virjanand left for Kashi where he lived for about 10 years, mastering Vedanta and Ayurveda, etc. From there Swami Virjanand went to Calcutta where he lived for number of year teaching Sanskrit grammar and literature. In spite of the material comforts he had at Calcutta he left and settled at Gadia Ghat on the banks of the Ganges. On the invitation of the Maharaja, Swamiji agreed to come to Alwar where he stayed for some time. From Alwar he went to Mathura where he established a "pathshala" to which students flocked from all over the country.

It was at Mathura that Swami Virjanand came across his most illustrious disciple, the famous Dayanand Saraswati. Swami Virjanand was a very hard task master and he expected a very high standard of diligence and discipline in his students. Even Dayanand Saraswati was not spared by his master. When Dayanand Saraswati

completed his course Swami Virjanand demanded from him as 'guru-dakshina' and extracted a promise that he will work incessantly to spread the knowledge of Vedas in this country and the consecrate his life in the annihilation of the heresies that had crept into the Purnac faith and re-establish the ancient religious methods and to disseminate TRUTH.

"***Dayanand my son, go and spread the true knowledge of the Vedas, dispel the darkness of ignorance, throw light on the true meaning of truth and liberate India".***

So Swami Dayanand urged Hindus to go back to Vedas, and to shun superstitious practices that had distorted their faith. But when we think of Dayanand we cannot but think of Swami Virjanand, his great and worthy guru Vedas and urged Hindus to worship one formless God. Swamiji laid the foundation of the Arya Samaj in 1875 Which was almost 8 years after the death of Swami Virjanand.

As Swami Dayanand Saraswati had carried out the wish and will of Swami Virjanand, it is incumbent upon all Aryas to obey the wish and will of Swami Dayanand Saraswati and carry on with the mission of preaching and practicing the VEDIC DHARM.

धर्मांधता कब छोड़ेगा समाज

भावना ठाकर

क्यूँ पढ़े लिखे लोग भी तथाकथित बाबाओं के बहकावे में आ जाते है? क्यूँ ये यह नहीं सोचते कि नियति ने जो लिखा होगा आपके भाग्य में वो होकर रहेगा। ज़िंदगी में परेशानी और तकलीफ़ों का भी वैसे ही स्थान है जैसे सफलता और दूसरी खुशियां । अक्सर बहुत से लोग, तकलीफ़ से घबराकर ज्योतिष और बाबाओं की शरण में जाकर झूठे विधि विधान में पड़कर ऐसे पाखंडियों को बढ़ावा देते हो जिनको खुद अपने भविष्य का पता नहीं होता। ऐसे लोगों के लिए धर्म के नाम पर डराकर धर्म को बेचना बहुत ही आसान काम होता है। इंसान चाहे कितनी भी तरक्की करले, परन्तु ईश्वर में पूर्ण विश्वास के आभाव में, मानसिक तौर पर हंमेशा एक डर से घिरा होताहै। ज़िंदगी हादसों का सफ़र है? ऐसे में ज़रा सी तकलीफ़आई नहीं कि इंसान घबरा जाता है। और इसी डर का फ़ायदा उठाते धर्म की दुकान खोलकर बैठे पाखण्डी बाबे आदि।

दो हाथ, दो पैर, एक सर वाला इंसान बाबा नाम धारण करते ही महान बन जाता है। अक्सर गले में रुद्राक्ष की माला पहन लेते है, सर पर तिलक लगा लेते है और शास्त्रों में लिखी चार बातें प्रवचन के तौर पर जोड़ देते है, और ऐसे पंडितों के चरणों में लोग हाथ जोड़कर दंडवत करते लोट जाते है। भगवान का डर दिखाकर, ग्रहों का खौफ़ दिखाकर और दान पुण्य का महत्व समझाते लोगों को लूटना बहुत आसान होता है। इन बाबाओं का पूरा नेटवर्क रहता है। ढ़ेर सारे अनुयायी बनाकर मार्केटिंग करके बड़े–बड़े व्यापारियों और अधिकारियों को फांसते पैसों का जुगाड़ करते है। और आम इंसानों को हिप्नोटाइज़ करके लूटते है। लोग शरीर पर पहने सोने के गहने तक उतारकर भेंट धर देते है। अन्ध विश्वासों में फंसे, गरीब से गरीब भी अपनी रोज़ की कमाई से भगवान के नाम पर हिस्सा निकालकर इन बाबो को भगवान का ऐजेन्ट मानकर भेंट चढ़ाते है। और तो और ऐसा भी देखा गया है कि भक्तों के ही पैसे भक्तों को ब्याज पर देते है।

सेवा के नाम पर ऐसी संस्थाओं का 5 स्टार होटल जैसा अस्पताल होता है परन्तु जिनके पैसों से बना होता है बीमार होने पर अस्पताल में उनसे ही तीन गुने पैसे वसूले जाते है। अनुयायी महाराजश्री के चरण धोकर पीते है और जेब में हाथ डालकर जितनी राशि होती है महाराजश्री के चरणों में अर्पण कर देते है। हमारे देश में धर्मांधता इतनी फूली–फली है कि तथाकथित बाबा और महाराज करोड़पति और अरबपति बन गए है।

ज़रा सोचिए जो महाराज बनकर रामकथा, शिव कथा या भागवत कथा पढ़ते है, और बड़ी–बड़ीबातें बोलकर उपदेश देते है वे महाराज, पंडित, बाबा या ज्योतिष आप और हम जैसे इंसान ही है। आसमान से स्पेशल ऊपर वाले ने नहीं भेजे। जैसे नौकरी, धंधा करके हम अपना घर चलाते है, वैसे ही कथा करना उनका काम या नौकरी है, जिससे उसका घर चलता है। हमें समझना यह है कि वे लोग भी आम इंसान ही है जिनका मन आसक्तियों से भरा हुआ है और

पाप करने का उन के मन में कोई भय नहीं होता। ऐसे लोगों को ईश्वर कर स्वरूप या ऐजेंट मानना हाथ जोड़कर दंडवत करते लेट जाना हमारी मूर्खता है।

यदि हमारे में ईश्वर को पाने की इतनी तड़प है तो अपने अन्दर ही ईश्वर को जानकर क्यों न उस अजन्मा, सर्ववयापक की स्तुती व अराधना करें। और पुण्य ही कमाना है तो गरीब, भूखे और जरूरत मंदो की मदद करके क्यूँ न कमाएं? इससे कम से कम हमें जो संतोष मिलेगा और जब हम ईश्वर के प्राण्यिों की सेवा करते हैं तो खुद व खुदहमारा नाम उनमें आ जायेगा जिन्हें ईश्वर प्यार करता है।

यह एक धर्म की बात नहीं सारे धर्म अब कमर्शियल बन गए है। किसी भी बड़े मंदिरों में जाओअब वीआईपी दर्शन की सुविधा मिलेगी, दर्शन केलए वीआईपी की अलग लाईन रहती है। कहीं परएक व्यक्ति के तीन सौ तो कहीं पर पाँच सौ वसूलेजाते है। और प्रसाद की क्वालिटी भी बदल जातीहै। इससे तो बेहतर है अपने अपने मन को ही मन्दिर बना लें। खरबों रुपये हरमंदिर की तिजोरियों में सड़ रहे है। बंद करो ये दानपुण्य के नाम पर धार्मिक संस्थाओं की तिजोरियांभरना, समाज में बहुत सारे जरूरतमंद होते हैं, उसेढूँढकर सहायता करो, भूखों को रोटी खिलाओउनके मुँह से जो दुआ निकलेगी वह आपको आबादकर देगी। भगवान कभी कुछ नहीं मांगते, भगवानतथा धर्म के नाम पर धर्म के ठेकेदार ही अपनीदुकान चलाने के लिए लोगों को डराकर लूटते है।ऐसे ढोंगी बाबाओं की बातों में आकर समय, पैसेऔर नैतिकता का पतन करना सरासर बेवकूफ़ी है।कहने का मतलब है खुद पर, ईश्वर पर औरअपने कर्मों पर अटल विश्वास रखिए ऐसे पाखंडियोंके बहकावे में न आईये, जब तक हम ऐसे लोगों कीमानसिकता पोषते रहेंगे इनकी दुकान राजधानीएक्सप्रेस की गति से चलती रहेगी और डरे हुए भक्तोंकी जेब हल्की होती रहेगी।

Sense of integrity

Honesty should be the foundation of our life structure. Children should be taught the importance of being true to your own self as well as to others. A person who follows the dictates of his conscience is the one who can sleep peacefully and live peacefully. Love and respect yourself: Before you can learn to love and respect others, it is very important to be able to love and respect yourself. That can only come with acceptance of all that God and Nature have given you and being content with it. It can come with following the dictates of your inner voice. Never downgrade yourself, nor imagine yourself any lesser than another.

India is good but for a few and in parts

Bhartendu Sood

Recently my friend called me to inform that he has a job offer in Nigeria and he'd be soon joining there. A bit flummoxed, I paused and said, " Nigeria is not a country you should go to."

" That way even India is not good. How many from developed countries opt to work here" he snapped back and continued, " You see, as India has a few good places in regard to infrastructure and civility, the same applies to Nigeria even. My friend who has arranged my placement, has been working there for the last 20 years at a very senior position and appears to be very happy as he is reluctant to return back to India though can get an equally good job." I didn't want to discuss further as I could see an element of truth in what he said.

Our country too is good for the upper 10% of population which covers the high class and

upper middle class. I know of the young working couple each getting +Rs 5 million package in India, they are not inclined to go to other countries, even USA, as they are quite happy. A few factors that make a person content and happy are, a good city like Bangalore and Chandigarh to stay and settle down, good house, good facilities of education for the children, good health facilities, stability and a sense of security. If all these factors are there then easy access to parents and other kin is a bonus after all as one grows, he comes to realize that man needs them or needs to be accessible to them easily. Friends are important but then family bonds have their own place and value.

For the vast millennials in India, all these factors are not available. To sum up they suffer from one deprivation or the other. Things become worse if they confront discrimination, instability and sense of insecurity and financial support of the government in adversities like panademic is missing. For feeling discriminated against or disadvantaged, which is the

case with almost 30% of them, factors can be religion, caste or place of birth or improper employment. Under the situation love for country and family bondage takes the back seat. Though life is not easy for the vast majority who leave the country for greener pastures as living away from wife and growing children is not easy always neither for them or for their families but then they have no choice and continue to work in the alien lands so that if not they, at least, their next generation can be a part of these 10%.

After Independence, India had its two marked phases of development. First started in 1970 onwards and continued till the first decade of this century, though the growth rate from 1998-2012 was very high, as good as China or any other country. Yes, development had started in 1970 itself with the government laying stress on cheap housing, electrification, access to water and production of fertilizers for the agriculture land. In this period about 70% grew as almost 40% came out of the poverty line. But after 2012 , it appears that only 10% from upper strata are growing and growth has stagnated for the remaining 90%. What is still worse is that the generation of new jobs has almost dried up. This phenomenon became more pronounced in the last two years during the Covid. Things happened in a manner that the earnings of these 10% went up exorbitantly like the BSE Sensex and those who were struggling to catch the ladder that takes a family to even 1 million plus earnings level, got the worst hit by the loss of jobs or earnings. This explains why despite having at least 10 Indians in the list of world's first fifty rich people, we are at + 100 rank in the matter of Human development factors like health, education, infrastructure and cleanliness. Nothing speaks better than a quantum jump on the inequality index . The Gini coefficient (inequality in income distribution) which was 34.4 in 2014 scaled to 48.9 in 2018 and now it is estimated to be 54.5.

I feel that today the biggest challenge for any Government should be to revive and accelerate the growth of the 90% and create jobs. The upper 10% have enough momentum to grow. Government shouldn't make the mistake of feeling happy by overall growth indicators because the way the upper 10% is growing it can shield the stagnation in the remaining 90%.

But, the question is how to plough back the savings of the upper 10%. Share market where they have been investing is not the right place in the context of the burning issues of unemployment and burgeononing inequlaity.. No doubt, the investors are maximising their wealth and the Government is getting tax but that is not serving the ultimate purpose of development and creation of new jobs. . The Finance Ministry will do well to create a saving instrument under which the money invested up to Rs 5 lacs in Startups, new ventures whether a listed company or the unlisted one should qualify for 100% tax benefit. Provided, it is not a running venture and second it provides minimum 10 new jobs per one crore of investment. No doubt the project should have been appraised by the accredited organization. No doubt, government may have to lose in the form of direct tax revenue but it can be the answer to the present issues of slow development and non-creation of enough jobs for the educated youth.

कुछ ऐसीं बातें जो आपको निश्चिंत करके परम आनन्द की और ले जातीं हैं

राम प्रसाद साहू

सम्पादक महोदय अब मैं 80 साल का होने जा रहा हूं। आर्य समाजी परिवार में जन्म हुआ इसलिये आर्य समाज में उपदेशों को सुनने का अवसर मिलता रहा। पढ़ाई के बाद जीवन के पहले 65 वर्षो में पूरी तरह नौकरी के लिये सम्पिर्त रहा। क्योंकि मेरा नोकरी का रिकार्ड अच्छा था इस लिये दो बार मुझे रिटायरमैंट के बाद, नये उंच पदों पर कार्य करने का मौका मिला। जब रिटायर हुआ तो मन नहां चाहता था कि नोकरी से अलग हूं। उदास भी था क्योंकि समझ नहीं आ रहा था अब क्या करूंगा। जिन्दगी में सोचा भी नहीं था जितना पैसा रिटायरमैंट के बाद मिला। फिर भी, काफी समय तक नौकरी में जो रूतवा था, उसके बारे में सोचकर उदास हो जाता कि वह सब क्यूं चला गया। धीरे धीरे मन को बहलाने के लिये धार्मिक पुस्तकों का सहारा लिया। मन का चैन बापिस आने लगा। कुछ ऐसी बातें पढ़ी जिन्होने मेरे जीवन को मोड़ दिया। मैं यह कुछ बाते अपने पठको के साथ सांझा करना चाहूंगा।

1 पहली ———जीवन में कुछ भी सदैव रहने वाला नहीं। हम पीछे की और देंखें तो कुछ ही वर्ष की बात है जब हम एक बच्चे थे। माता पिता ही हमारे लिये सब कुछ होते थे। कुछ बड़े हुये तो पढ़ाई व नौकरी के लिये घर से बाहर निकले। शादी हुई तो नये सम्बन्ध बने व पुराने सम्बन्ध फीके पड़ने लगे। पुराने सम्बन्धों के गरमराहट कम होने लगी। जिन माता पिता ने सब कुछ न्योछावर कर हमें पढ़ाया लिखाया बड़ा किया था, उनका महत्व व उनके लिये प्यार पत्नी व बच्चों के लिये प्यार से कम होने लगा। स्थिती ऐसी भी आई कि कभी कभी उनकी उपेक्षा भी होने लगी। परन्तु ऐसा लगता है कि प्रकृति का चक्कर ऐसे ही चलता है। जब मेंरे अपने बच्चे बड़े हुये, शादियां विवाह हुये तो स्वभाविक तौर पर उन के साथ सम्बन्धों की गरिमा कम होने लगी। पहले कुछ बुरा लगा परन्तु शिघ्र ही यह आभास हो गया कि इस में न बच्चें की गलती है न बड़ों की, नये सम्बन्ध बनेगें पुराने फीके पढ़ेगें । शिक्षा यह मिली कि यदि अपनों के लिये जीते रहोगे तो वह मोह का रूप ले लेगा जो कि दुख का कारण है, इसलिये अच्छा यही होगां कि हम प्यार को बांटे और नये रिश्ते सम्बन्ध बनाते जायें जो कि प्रात में सूर्य की किरण की तरह ही सुख देने वाला है।

2 जीवन के हर भाग में हमारे कर्तव्य व अपेक्षायें एक जैसी नहीं रहती। शादी हो गई, गृहस्थ बन गया फिर भी यह सोचते रहें कि माता पिता ही सब करेंगे तो यह हमारी भूल है। अब हमने माता पिता का करना है न कि

उन्होने हमारा। इसी तरह जब बच्चे रस बस गये तो हमारे कर्तव्य उनकी तरफ कम और समाज जिसने कि हमें इतना कुछ दिया अधिक हो जाते है।

3 जो भी ईश्वर ने हम को दिया है वह भोगने के लिये दिया, उसका ही है व उसके पास ही चला जायेगा। इसको अपना समझना मूर्खता है। परन्तु विलासपूर्ण ढंग से न भोगकर त्यागपूर्ण ढंग से भोंगे।

4 संग्रह से बांटना अच्छा है। बांटने में यश और प्रसन्नता है। संग्रह में चिन्ता तो है ही पर प्रसन्नता नहीं रहती। हमारी वैदिक संसकृति बहुत ठीक कहती है–––तेन त्यझेन भुंजिथा अर्थात जीवन केवल संग्रह के लिये ही नहीं है। इसी लिये शास्त्रों में धन की तीन गति बताई है। दान, भोग और नाश। जो धन की सदुपयोग नहीं करते और केवल संचय में ही प्रवृत रहता है, उस धन का नाश ही होता है।

5 जितना परिवार का दायरा बड़ा करेंगे उतना ही खुश रहेंगे। प्रयत्न हम को करना है, इस आयु में दूसरे हमारे पास भाग कर नहीं आयेगे। यदि कुछ नये सम्बन्ध बनते हैं तो और भी अच्छा है। किसी के उपर भी अपना अधिकार समझना दुख का कारण हो सकता है।

6 पैसा होना आवश्यक है, परन्तु उसकी सीमा है, बाकी चीजें प्राप्त करने के लिये हमें पैसे का कुछ त्याग करना होगा।

7 प्रयत्न करते रहे परन्तु यदि अपेक्षा के अनुसार सफलता नहीं मिली तो यह सोचकर फिर प्रयत्न में लग जायें कि ईश्वर जो भी करता है उस में हमारी भलाई छिपी होती है। यह भलाई हमें कब समझ में आये यह ईश्वर कृपा पर है।

सेवा निवृत सह सचिव छतिसगढ़ सरकार

अपने निजी काम स्वयं करना योगा से कहीं लाभदायक

अक्सर देखा गया है पहले तो डाक्टर दुनिया भर के टैस्टों पर हजारों पैसा खर्चा करवा देते हैं फिर जब कुछ नहीं मिलता तो कहते हैं–––खास कुछ नहीं, योगा करो ठीक हो जायेगा। हम भी बापिस आतें हैं और किसी योगा गुरू की तलाश में लग जातें है। मेरा यह मानना है कि योगा से भी कहीं आवश्यक यह है कि जहां तक सम्भव हो हम अपने निजी कार्य सवयं करें। हर निजी कार्य के लिये दूसरे पर निर्भर न करें। जब हम निजी कार्य दूसरों को तकुलफ देने की बजाय स्वयं करना शुरू कर देते हैं तो बहुत सा व्यायाम तो वैसे ही हो जाता है। उदाहरण के लिये मेज कुर्सी पर काम करते हुये प्यास लगी। एक ओपशन तो यह है कि किसी को आवाज दी–––पानी पिला दो। दूसरी यह है, उठे और पानी पीकर आ गये। कुर्सी पर लगातार बैठने से उठकर पानी पी आना सेहत के लिहाज कहीं अच्छा है।

योगा का उदेश्य भी तो यही है कि हम अपने अंगों को हिलाये डुलायें। इसके दो बहुत बडें फायदे यह भी हैं कि जब हम अपने निजी कार्य स्वयं करते है तो अपने में आत्मविश्वास रहता है दूसरा यह है कि आत्मनिर्भता का कोई मुकावला नहीं। तीसरा, दूसरों पर निर्भता भी कई बार क्रोद्ध व आक्रोश को जन्म देते हैं, कारण जिस पर हम निर्भर होते हैं वह जरूरी नहीं हमारे अनुसार ही कार्य करे। यह क्रोद्ध व आक्रोश भी तो अस्वस्थता का एक बड़ा कारण है।

इसलिये योगा बाद में पहले जहां तक सम्भव है अपने निजी कार्य स्वयं करने की कोशिश करनी चाहिये। हो यदि शारिरिक हालत ठीक नहीं तो बात अलग है।

वंशवाद व प्रधानमन्त्री श्री मोदी

भारतेन्दुसूद

सात साल तक देश के शासन की डोर सम्भालने के बाद कोई भी व्यक्ति अपनी उपलब्धियों की बात करता है न कि विपक्ष की कमियों की। परन्तु हमारे प्रधानमन्त्री ले –देकर पुराने घिसे पिटे मुदे–– कांग्रेस में वंशवाद पर पहुंच जाते हैं। इस से एक बात तो स्पष्ट है कि हमारे प्रधानमन्त्री श्री मोदी पिछले सात साल में हर क्षेत्र में बुरी तरह बिफल रहे हैं। असफलताओं की इस लड़ी में सब से ताजा है देश की अर्थ व्यवस्था को अरबों रूपयों का नुकसान व 700 के करीब जानों के नुकसान के बाद किसान विधेयक को आने वाले चुनावों में मंडराती हार को देखने के बाद बापिस लेना।

जहां तक वंशवाद का सवाल है यह किसी भी रातनैतिक पार्टी का अन्दरूनी मामला है। हां यदि मोदी साहब को वंशवाद से इतना ही परहेज है तो पहले अपनी पार्टी को इस से दूर रखें। पर सच्चाई यह है कि इनकी अपनी पार्टी भाजपा में भी वंशवाद वैसे ही है जैसे कि भारत की किसी अन्य पार्टी में या कांग्रेस में। प्रधानमन्त्री श्री मोदी स्वयं को और मनोहर लाल खटर और योगी को छोड़ दे जिनके कोई संतान नहीं ,बाकी सभी भाजपा के नेताओं के तो वंशदर वंश राजनिती में सक्रिय है । दूर जाने की आवश्यकता नहीं। श्री प्रेम कुमार धूमल हिमाचल के मुख्य मन्त्री थे और अब भी होते यदि चुनाव न हारते। एक बेटा केनद्रिय मन्त्री है और दूसरा बेटा बड़े भाई के मन्त्री बनने के बाद भारतीय क्रिकअ कंटोल के महत्वपूर्ण पद पद है। यह वंशवाद नही तो और क्या है। मैं इस में कोई बुराई नहीं देखता। यदि डाक्टर अपने बेटे को डाक्टर , बकील अपने बटे को बकील बनाना चाहता है तो एक राजनेता अपने बेटे को राजनेता ही क्यों न बनाये। यह तो है नहीं कि उसे कुर्सी पर बिठा दिया जाता है वह चुनाब जीत कर आता है तभी उसे कुर्सी मिलती है। मोदी साहब वंशवाद का विरोद्ध करें तो अच्छा नहीं लगता, उनका विरोद्ध तो तब माइने रखता यदि अपनी अगली पीड़ी होती और उन्हे राजनिती से दूर रखते। **Lack of opportunity is no morality.**

फिर एक और बात यह है कि यदि शासक योग्य, न्यायकारी, स्वेदनशील प्रजा के दुख सुख को समझने वाला हो तो वंशवाद में भी क्या बुराई है। रामराज्य जिसको याद करते हैं वह वंशवाद ही तो था। लोकतन्त्र में भी निरकुंश तानाशाह हो सकते है, हमने अपने देश में ही देखे है और देख रहें है। ऐसे लोकतन्त्र से तो रामायण का वंशवाद कहीं अच्छा था।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

SUMAYA CELEBERATED HER BIRTHDAY WITH NGO CHILDREN

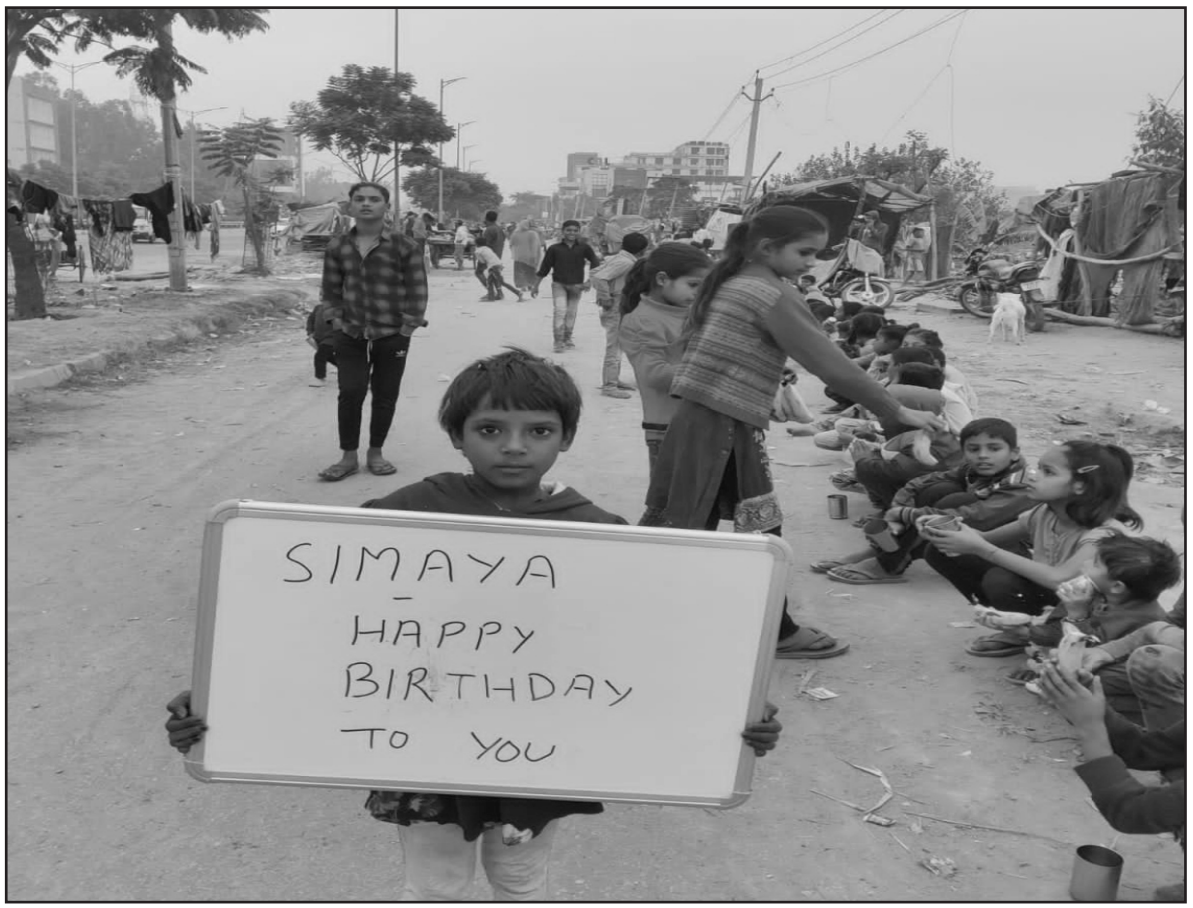

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

ABHA POPLI

BABLOO SHARMA

DAMINI

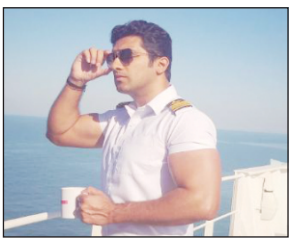

CAPT ASHWIN VERMA

MRS AND MR. O.P.NANDWANI

MRS CHUNNI

MUKESH GUPTA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870